समीक्षा एवं सुझाव : पिछोला से अमरकुण्ड, कुम्हारिया तालाब, रंग सागर एवं स्वरूप सागर आपस में अच्छी तरह से जुड़े हुए नहीं हैं। ब्रह्मपोल पुलिया जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है। चाँदपोल पुलिया के मेहराब के आकार भी छोटे हैं। इन पुलियाओं का पुनर्निर्माण आवश्यक है। भूमिगत सीवरेज बनने के बाद भी चारों तरफ से गन्दे नाले, नालियाँ एवं घरों से सीधा गन्दा जल इन झीलों में नियमित रूप से समाहित हो रहा है। इस क्षेत्र में रहने वाले नागरिकों का इन झीलों के प्रति जैसा कि पूर्व में बचपन से ही प्रगाढ़ सम्बन्ध रहता था, उसका अभाव हो चुका है। पूर्व में इन घाटों पर ये नागरिक नहाते एवं कपड़े धोते थे। वर्तमान नियमों के अनुसार अब यह संभव नहीं है, अतः झीलों के प्रति आम नागरिकों के लगाव में काफी हद तक कमी आ गई हैं।

झीलों को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए झीलों के किनारे रहने वाले नागरिक अपने भवन को पुनर्निर्माण तथा अधिक सुविधायुक्त स्वयं के लिए या व्यापारिक दृष्टिकोण से नहीं कर सकते हैं, अतः इन झीलों को अपने लिए हितकारी नहीं मानकर इन्हें स्वच्छ एवं प्रदूषण मुक्त रखने में भी आम नागरिक सहयोग नहीं करते हैं। हालांकि वर्तमान में कुछ गणमान्य नागरिक, स्वयंसेवी संगठन आदि मिलकर झीलों के सफाई अभियान में आम नागरिकों को जोड़ने का पूर्ण प्रयास कर रहे हैं।

इन झीलों के किनारे स्थित प्रत्येक मकान, होटल या रेस्टोरेन्ट का सर्वे करवाकर यह पता लगाया जाना चाहिये कि सीवरेज या गन्दगी युक्त पानी झील में प्रविष्ट तो नहीं हो रहा है। यदि प्रविष्ट हो रहा है उन्हें प्रथम स्तर पर इस हेतु जागरूक कर सहयोग करने का निवेदन किया जाये तथा सीवरेज एवं गन्दे पानी को टैंक बनाकर पम्प द्वारा निगम की सीवरेज लाइन में डाले जाने का प्रयास किया जाना चाहिये। यदि इस समझाइश के बाद भी समस्या का हल नहीं होता है तो नियमानुसार कठोर कार्रवाई करने से भी परहेज नहीं किया जाना चाहिये।

स्थानीय नागरिकों को प्रदूषित झीलों, गन्दे पानी, मच्छरों आदि के जनस्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त अधिक से अधिक बच्चों, युवाओं एवं गणमान्य नागरिकों को इस अभियान में जोड़कर झीलों के स्वच्छता कार्यक्रम को व्यापकता के साथ आगे बढ़ाकर उदयपुर झील संकुल को प्रदूषण मुक्त रखने हेतु प्राथमिकता के आधार पर प्रयास किये जाने चाहिये।

पिछोला, अमरकुण्ड, कुम्हारिया तालाब, रंगसागर एवं स्वरूपसागर झीलें पूर्ण रूप से आपस में जुड़ी हुई नहीं होने से तथा जलकुम्भी व अन्य जलीय खरपतवार के निर्बाध फैलाव एवं गन्दे पानी के सीधे झीलों में प्रवेश के कारण व्यवस्थित नौकायन नहीं हो पा रहा है। नौकायन से जल में एयरेशन अधिक होगा जिससे सडांध क्रिया में तीव्रता से जल प्रदूषण मुक्त होगा। पूर्व में इन झीलों में नियमित नौकायन होता था जिससे ये झील प्रदूषण मुक्त रहती थी।

ब्रह्मपोल पुलिया वर्तमान स्थिति

ब्रह्मपोल पुलिया हेतु प्रस्तावित आधुनिक तकनीकी के आधार पर लोहे की पुलिया–एक सोच

पिछोला झील (प्रदूषित तालाब) से कुम्हारिया तालाब में वर्षाकाल में प्राकृतिक जल प्रवाह एवं नौकायन संचालन से प्रदूषण नियंत्रण संभव है।

ब्रह्मपोल एवं अम्बापोल पुलिया भी चाँदपोल पुलिया की तरह मेवाड़ की वास्तुकला के अनुसार बड़े मेहराब के साथ बनाई जा सकती है।

पर्यटक की दृष्टि से दर्शनीय नहीं है, इसके अतिरिक्त कुम्हारिया तालाब एवं रंगसागर के मध्य नाव संचालन एवं मशीन द्वारा खरपतवार नियंत्रण भी संभव नहीं है।

रंगसागर व कुम्हारिया तालाब के मध्य अम्बापोल पुलिया–वर्तमान स्वरूप

इस स्वरूप से कुम्हारिया तालाब एवं रंगसागर के मध्य नाव संचालन मशीन द्वारा खरपतवार नियंत्रण भी संभव हो सकेगा।

रंगसागर व कुम्हारिया तालाब के मध्य अम्बापोल का प्रस्तावित नया रूप–एक सोच

रंगसागर व कुम्हारिया तालाब के मध्य स्थित अम्बापोल का प्रस्तावित नया रूप – एक सोच

रंगसागर व स्वरूपसागर के मध्य नई (जाटवाड़ी) वर्तमान पुलिया

पर्यटक की दृष्टि से दर्शनीय नहीं है, इसके अतिरिक्त स्वरूप सागर एवं रंगसागर के मध्य वर्तमान पुलिया से व्यवस्थित नाव संचालन भी संभव नहीं है।

रंगसागर व स्वरूपसागर के मध्य वर्तमान पुलिया के स्थान पर प्रस्तावित सुन्दर एवं भव्य पुलिया–एक सोच

इस स्वरूप से स्वरूप सागर एवं रंगसागर के मध्य व्यवस्थित नाव संचालन के साथ बड़े बोट का संचालन भी संभव हो सकेगा।

सेठियों की बाड़ी

उदाहरण के तौर पर महाराष्ट्र में एक दर्शनीय स्थल लवासा का विकास झीलों के किनारे हुआ है। निःसन्देह इसका विकास करते हुए इस क्षेत्र से विसर्जित गन्दे पानी एवं सीवरेज के निस्तारण हेतु कोई समुचित व्यवस्था अवश्य की होगी। इसी को ध्यान में रखते हुए क्या हम अमरकुण्ड, कुम्हारिया तालाब, रंग सागर एवं स्वरूप सागर का विकास इसी तर्ज पर नहीं कर सकते? इस तरह के विकास से स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा एवं इन झीलों के प्रति स्नेह एवं लगाव में अवश्य वृद्धि होगी। इन झीलों को प्रदूषण मुक्त रखने में जनसहभागिता एक श्रेष्ठ मार्ग होगा।

An artist's impression of the Lavasa lakeline.

पुलियाओं का नवीनीकरण : दायजीराज की पुलिया शायद पिछोला के पूर्वी छोर से पश्चिमी छोर तक पर्यटक एवं स्थानीय नागरिक सुगमता से पैदल पहुँच सकें, इसी उद्देश्य से बनाई गई होगी। इस पर वाहन से यात्रा संभव नहीं है तथा इसके मेहराब भी छोटे रखे गये। इससे एवं चांदपोल पुलिया से बड़ी नावें आर–पार नहीं जा सकती हैं। चांदपोल एवं दायजीराज पुलिया से आगे समानान्तर थोड़ी दूरी पर पूर्वी छोर के पास स्थित रोवणिया घाट से पश्चिमी छोर पर स्थित हनुमान घाट तक एक और नई पुलिया नगर निगम द्वारा प्रस्तावित है। इस पुलिया का निर्माण पूर्णतया उच्च स्तर की आधुनिक तकनीक से किया जावे ताकि वाहन एवं बड़ी नावों का आवागमन आसानी से हो सके। इसका निर्माण दायजीराज पुलिया के स्थान पर करके इसका नाम दायजीराज पुलिया रखा जावे। इसी प्रकार ब्रह्मपोल, अम्बापोल, चांदपोल, दायजीराज पुलिया का भी जीर्णोद्धार किया जावे जिससे पिछोला, अमरकुण्ड, रंगसागर, कुम्हारिया तालाब, स्वरूप सागर एक दूसरे से पूर्णतया जुड़ सकेंगे तथा सभी झीलों में नावें एक साथ सुगमता से संचालित होने के साथ उदयपुर की विरासत के दिग्दर्शन से पर्यटक और अधिक आकर्षित हो सकेंगे। साथ ही इन झीलों में जलीय खरपतवार, जलकुंभी, काई, प्लास्टिक अवशेष, पूजन सामग्री आदि को भी एक ही मशीन की सहायता से नियमित रूप से हटाने में भी सुगमता होगी। इस प्रकार उक्त चारों पुलियाओं के नवीनीकरण से इन झीलों की सुन्दरता में अद्वितीय वृद्धि होगी तथा सही रूप से 'वेनिस' का स्वरूप परिलक्षित हो सकेगा।

पिछोला झील तंत्र को प्रदूषणमुक्त, स्वच्छ एवं सुन्दर रखने के कतिपय सुझाव : पिछोला संकुल के अमरकुण्ड, रंगसागर, कुम्हारिया तालाब एवं स्वरूप सागर को प्रदूषण मुक्त रखने एवं उनके अपने पूर्व स्वरूप में लाने हेतु निम्नांकित बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है :–

- इस कार्य हेतु पूर्ण जनसहयोग के साथ ही साथ तकनीकी विशेषज्ञों के मार्गदर्शन की आवश्यकता है।
- इन झीलों के प्रदूषण का मुख्य स्रोत कुम्हारिया तालाब है जो पिछोला, रंगसागर एवं स्वरूप सागर को भी प्रदूषित करता है। कुम्हारिया तालाब को प्रदूषण मुक्त किये बिना ये झीलें भी प्रदूषण मुक्त नहीं रह पायेंगी। जिस तरह गल्फ ऑफ अलास्का में दो रंगों का समुद्री नजारा देखने को मिलता है, वैसा ही नजारा उदयपुर में पिछोला के रंगसागर एवं कुम्हारिया तालाब में भी मिलता है तथा अम्बापोल पुलिया के दोनों ओर दो रंग का पानी दिखता है क्योंकि कुम्हारिया तालाब में गन्दे नाले एवं सीवरेज का पानी नियमित रूप से समाहित हो रहा है। अतः वर्तमान में स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत सीवरेज का कार्य प्रगतिरत है। सीवरेज निस्तारण का यह कार्य पूर्णतया गुणवत्तायुक्त एवं उच्च स्तर का होगा, तभी इन झीलों को प्रदूषण मुक्त किया जा सकेगा।

गल्फ ऑफ अलास्का – दो रंगों का समुद्री नजारा

कुम्हारिया तालाब एवं रंगसागर एक दूसरे से भिन्न रंग लिए हुए

- रंगसागर एवं कुम्हारिया तालाब के चारों ओर रिंग रोड़ का निर्माण आवश्यक हो गया है तथा वर्तमान में इन झीलों के पेटे में डाली गई सीवरेज लाइन को रिंग रोड़ पर स्थानान्तरित करना एकमात्र विकल्प है। इसके लिए समुद्री क्षेत्रों में काम करने वाले उच्च तकनीकी विशेषज्ञों की सेवाएँ परामर्श के रूप में लेनी चाहिये। निर्माण कार्य उच्च दक्षता एवं अनुभवी कर्मियों द्वारा उच्च गुणवत्ता वाली निर्माण सामग्री के साथ ही किया जाना चाहिये।
- ब्रह्मपोल, अम्बापोल, चाँदपोल एवं नई पुलिया (सिलावटवाड़ी) के पुलों को नया, आकर्षक और दर्शनीय स्वरूप देकर पिछोला, अमरकुण्ड, रंगसागर, कुम्हारिया तालाब और स्वरूप सागर को आपस में पूर्णतया जोड़ा जाना चाहिये।
- रंग सागर के मध्य टीरा मगरी को प्राथमिकता के आधार पर फव्वारों युक्त पार्क के रूप में विकसित किया जाना चाहिये। इसका विकास इस प्रकार से किया जाये कि उस पर अनेक प्रकार के रंग–बिरंगे पक्षी विचरण कर सकें और यह पार्क अति सुन्दर लगे और पर्यटक इसे देखे बगैर उदयपुर नहीं छोड़ सकें।
- इन झीलों को आपस में मेवाड़ में प्रचलित अथवा आधुनिक वास्तुकला से अति सुन्दर एवं चौड़े पुलों के माध्यम से जोड़ने से सुन्दरता में वृद्धि होगी। नौका संचालन व्यापक रूप से संभव होगा, जिससे पर्यटक नौकायन द्वारा गणगौर घाट या लाल घाट से चलकर पिछोला का चक्कर लगाते हुए विशाल राजमहल, जगमन्दिर, लेक पैलेस, होटल लीला पैलेस के साथ अनेक बड़ी और छोटी होटलों, शहरकोट एवं पुरानी बस्तियों के साथ कुम्हारिया तालाब, रंगसागर होते हुए स्वरूप सागर तक फैले हुए उदयपुर की पुरातत्व छवि भी देख सकेंगे और लौटते हुए विकसित टीरा पार्क एवं उसमें रंग–बिरंगे पक्षियों, म्यूजिकल फव्वारों को देखते हुए पुनः गणगौर घाट अथवा लालघाट पर लौट सकेंगे। रात्रि में पर्यटक आधुनिक एवं विरासत में मिली नावों पर बैठकर इन झीलों की अद्वितीय सुन्दरता का भी लुत्फ उठा सकेंगे।

रंग सागर की टीरा मगरी का वर्तमान स्वरूप

- इन झीलों को जोड़ने, सुन्दरतम् पुलों, रिंग रोड़ एवं पार्क निर्माण करने के लिए प्रशासन एवं पर्यावरण विभाग आवश्यक स्वीकृति के साथ सहयोग करें।
- इन झीलों के किनारों को दर्शनीय बनाना, शहर कोट की पूर्ण मरम्मत कर रंग–रोगन करना आवश्यक है। उस पर किये गये सरकारी एवं गैर–सरकारी अशोभनीय निर्माणों को तोड़ना या स्थानान्तरित करना वर्तमान समय की आवश्यकता है।
- इन झीलों के चारों ओर रिंग रोड़, पुलों एवं शहर कोट पर सुन्दर प्रकाश व्यवस्था करना।
- इन झीलों में किये गये अतिक्रमण को पूर्व रेवेन्यू नक्शों एवं रिकॉर्ड्स तथा आज की आवश्यकता के आधार पर हटाया जाये तथा पूर्व में नियमित किये गये अतिक्रमणों को भी झील के हित में बाजार दर से मुआवजा देकर हटाया जाये। इससे इन झीलों के चारों ओर बसे हुए नागरिकों को अतिरिक्त व्यवसाय मिलेगा।
- जल–मल निकास की समस्या के सटीक समाधान के अभाव में आज झीलों के किनारे पर बसे हुए लोग अपने घरों में नवनिर्माण व मरम्मत नहीं करवा पा रहे हैं, जिससे झीलों के प्रति उनका नकारात्मक रवैया बना हुआ है और वे झीलों से आत्मीयता के साथ नहीं जुड़े हुए हैं। अतः उन्हें अपने विरासत में मिले मकानों को आधुनिक सुविधायुक्त बनाने एवं नवनिर्माण करने की नियमानुसार स्वीकृति देना यथोचित होगा। इससे स्थानीय निवासियों की झीलों के प्रति लगाव में वृद्धि होगी।

निष्कर्ष के तौर पर यदि सरकारी एवं पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के माध्यम से इस योजना पर यथेष्ट निवेश किया जाये तो इस जल संकुल को विश्व का एक श्रेष्ठतम् पर्यटक स्थल बनाया जा सकता है, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

रंग सागर की टीरा मगरी का प्रस्तावित स्वरूप – एक सोच

इस पर चार दीवारी बनाकर पक्षीप्रेमी पेड़ लगाकर इसे सुरक्षित क्षेत्र घोषित करना चाहिये। दोनों मगरियों के मध्य स्थान पर फ्लोटिंग फाउन्टेन्स स्थापित किये जा सकते हैं।

उदयपुर शहर में सर्दियों का अहसास तेज होते ही स्वरूप सागर झील के इस टापू पर बगुलों का यह झुण्ड धूप में घंटों बैठा रहता है, अतः इस टापू को पक्षियों के लिए विश्राम एवं प्रजनन स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिये।